

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Thursday, 24 September 2026

इंडियन रुपये की अंतरराष्ट्रीय पहचान : डॉलर, यूरो और युआन के मुकाबले अभी लंबा इंतजार

Publisher

Published on 08 Oct 2025



भारत लंबे समय से चाहता है कि उसका मुद्रा रूप **रुपया** अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता और स्वीकार्यता हासिल करे। डॉलर, यूरो, पाउंड स्टर्लिंग और चीनी युआन जैसी शीर्ष मुद्राओं की श्रेणी में शामिल होना भारत का वित्तीय लक्ष्य है। इस दिशा में भारत की महत्वाकांक्षा स्पष्ट है, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि इसके लिए अभी **लंबा इंतजार** करना पड़ेगा।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मुद्रा की मान्यता केवल शक्ति और आर्थिक स्थिति पर निर्भर नहीं करती। इसके लिए स्थिर आर्थिक नीतियां, मजबूत विनिमय दर, अंतरराष्ट्रीय व्यापार में बढ़त और विदेशी निवेश का संतुलित प्रवाह आवश्यक होता है। भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है, लेकिन डॉलर और यूरो जैसी मजबूत मुद्राओं के मुकाबले रुपया अभी कई मोर्चों पर पीछे है।

विशेषज्ञों का कहना है कि चीन ने अपने युआन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने में कई दशक लगाए हैं। चीन ने अपने मुद्रा नियंत्रण, निर्यात-आधारित आर्थिक नीति और वैश्विक निवेश के माध्यम से युआन को मजबूत किया। भारत भी रुपया को अंतरराष्ट्रीय मान्यता दिलाना चाहता है, लेकिन इसकी राह उतनी सरल नहीं है।

भारत में मुद्रास्फीति, विनिमय दर में उतार-चढ़ाव और विदेशी निवेश में अस्थिरता रुपये की अंतरराष्ट्रीय पहचान को फिलहाल सीमित कर रही है। डॉलर, यूरो और युआन की तुलना में रुपया अभी सुरक्षित विकल्प नहीं माना जाता। इसका अर्थ है कि भारतीय मुद्रा को वैश्विक व्यापार में स्थिर और भरोसेमंद विकल्प बनना होगा।

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा बनने के लिए भारत को कई महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे। पहला, आर्थिक नीति में स्थिरता और पूर्वानुमान योग्य रणनीति अपनाना। दूसरा, विदेशी निवेश और निर्यात को बढ़ावा देना ताकि रुपया अंतरराष्ट्रीय व्यापार में अधिक प्रयोग हो। तीसरा, विदेशी मुद्रा भंडार को मजबूत करना और मुद्रा बाजार में उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करना।

अर्थशास्त्रियों का कहना है कि रुपया की अंतरराष्ट्रीय पहचान भारत की वैश्विक अर्थव्यवस्था में वृद्धि और निवेशकों के विश्वास पर

भी निर्भर करती है। जब भारत की अर्थव्यवस्था अधिक पारदर्शी, स्थिर और निवेशकों के अनुकूल होगी, तभी रुपया वैश्विक स्तर पर मजबूत और स्वीकार्य मुद्रा बन सकता है।

वर्तमान में भारत का रुपया अंतरराष्ट्रीय मुद्रा बाजार में सीमित उपयोग में है। हालांकि, देश ने पिछले कुछ वर्षों में इसे विदेशी व्यापार और निवेश में उपयोगी बनाने के लिए कदम उठाए हैं। भारत सरकार और रिजर्व बैंक ने मुद्रा विनिमय और विदेशी निवेश में सुधार किए हैं, लेकिन वैश्विक मान्यता प्राप्त करने में समय लगेगा।

रुपया की अंतरराष्ट्रीय पहचान के लिए वैश्विक स्तर पर विश्वास और स्थिरता जरूरी है। चीन ने युआन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार कराने में कई सालों का धैर्य दिखाया। भारत को भी अपने आर्थिक ढांचे, वित्तीय नियम और वैश्विक निवेश नीतियों में सुधार करके रुपया मजबूत करना होगा।

इस दिशा में सुधार होने के बाद ही रुपया डॉलर, यूरो और युआन जैसी प्रमुख मुद्राओं की कतार में शामिल हो सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह लक्ष्य तत्काल संभव नहीं है। रुपये को वैश्विक स्तर पर अपनाने और भरोसेमंद विकल्प बनने में कई साल लग सकते हैं।

भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है और रुपया धीरे-धीरे अपनी पहचान बना रहा है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार और विदेशी निवेश में इसके प्रयोग को बढ़ाना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। भारत का लक्ष्य स्पष्ट है, लेकिन इसे हासिल करने के लिए रणनीति और धैर्य दोनों की आवश्यकता है।

कुल मिलाकर, भारतीय रुपया अंतरराष्ट्रीय मान्यता पाने की दिशा में अग्रसर है, लेकिन यह एक लंबी प्रक्रिया है। डॉलर, यूरो और युआन जैसी मजबूत मुद्राओं के मुकाबले अपनी जगह बनाने के लिए रुपये को समय, स्थिरता और वैश्विक विश्वास की आवश्यकता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि भविष्य में भारतीय रुपया वैश्विक स्तर पर अधिक स्वीकार्य और उपयोगी बन सकता है, लेकिन फिलहाल इसके लिए लंबा इंतजार करना होगा।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.